डॉ0 राममनोहर लोहिया की दृष्टि में भारतीय चिन्तन परम्परा

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

डॉ0 लोहिया निजी एवं सार्वजनिक जीवन में समीकरण चाहते थे। डॉ0 लोहिया के ये दोनों जीवन एकीकृत थे। डॉ0 लोहिया के वास्तविक जीवन में इनका पूर्ण सामंजस्य था। डॉ0 लोहिया का मानना था कि जब हमारा नेतृत्व आदर्श और अनुकरणीय होगा तो समाज में सुख–शान्ति आयेगी क्योंकि सीधा सा सिद्धान्त है–''यथाराजा तथा प्रजा'' वे प्लेन लिविंग एण्ड हाई थिंकिंग के जीवंत प्रतीक थे। डॉ0 लोहिया का जीवन एक फकीराना जीवन था , डॉ0 लोहिया का मानना था कि''अगर मनुष्य व्यवहार को विलकुल तोड़कर आदर्श को अपना लेता है, तब उसको कहना चाहिए, थोड़ा बहुत पागल है। और अगर मनुष्य आदर्श को तोड़कर व्यवहार को बिलकुल अपना लेता है तब उसको कहना चाहिए, मौकेबाज है। आदर्श और व्यवहार का हमेशा हर जगह फैसला करना पड़ेगा। किसी राजनीतिक पार्टी में रहने वाले किसी भी आदमी को आदर्श और व्यवहार के बीच में कोई ऐसी जगह ढूंढ़नी चाहिए जो आदर्श को भी बढ़ाती हो और व्यावहारिकता को भी ।'' डॉ0 लोहिया अपव्यय और खर्चीली राजनीति को देश के लिए अहितकर मानते थे। नेताओं के शाही मुगलिया ठाठ–बाठ के खिलाफ थे। डॉ0 लोहिया खर्च की एक सीमा के हिमायती थे। फर्रूखाबाद से सांसद चुने जाने तक उनके नाम से देश में कहीं भी कोई खाता नहीं था। चुनने के पश्चात् देय भत्ता के लिए उनका खाता खोला गया था। डॉ0 लोहिया अपना कोई निजी वाहन न था। डॉ0 लोहिया रिक्शे से नहीं चलते थे। इस प्रकार डॉ0 लोहिया का जीवन कर्म और विचार का अद्वैत था। डॉ0 लोहिया दुविधा विभक्त नहीं थे।

बर्लिन के विश्व प्रसिद्ध हम्बर्ड विश्वविद्यालय में नमक आंदोलन पर शोध प्रस्तुत कर पी0 एच0 डी0 (डाक्टरेट) की डिग्री हासिल करनेवाले डा0 लोहिया अपने आपको कुजात गांधीवादी कहलाने में गौरव मानते थे। राम, कृष्ण, शिव उनके अनुसार भारतीय जनता के मानस की आदर्श कल्पना के प्रतीक थे। डा0 लोहिया के अनुसार राम का तात्पर्य असीम विवेक था। मर्यादित जीवन, उन्मुक्त हृदय और असीम विवेक से ही कोई देश ऊँचाईयों पर पहुँच सकता है, जिसकी परिकल्पना भारत माता की संतानों ने कभी की थी। डा0 लोहिया को शिकायत थी कि भारत के लोग उपर्युक्त आदर्श चरित्रों के अवगुणों को जल्दी ग्रहण कर लेते हैं। राम–भक्त अमर्यादित और पत्नी छोड़ने वाले हो गये हैं, कृष्ण–भक्त संकीर्ण हृदय के विलासी बन गये हैं और शिव–भक्त नशाखोरी और अनैतिक कार्यों में लिप्त हैं। डा0 लोहिया ने तत्कालीन सरकार से आग्रह किया था कि देश को उपभोगमुखी व्यवस्था की बजाय उत्पादन मुखी व्यवस्था की ओर ले जाना ही सही मार्ग है। देश के संपूर्ण सोने को देश के खजाने में गिरवी रखकर पानी, बिजली और स्वास्थ्य की सुविधा जनता को उपलब्ध कराने की उन्होंने वकालत की, साथ ही उन्होंने देश के कलम घसीटू अनुत्पादक कर्मचारियों की फौज को नहर, सड़क, तालाब खोदने के काम में नियोजित करने का आग्रह किया। वे विश्वविद्यालयों में थोक भाव में हो रहे

शोध–कार्यों से असंतुष्ट थे क्योंकि उनमें मौलिकता और नव चिन्तन का अभाव है और ये डिग्रियां महज नौकरी का साधन बन गई हैं।

डॉ0 राममनोहर लोहिया के बारे में जितना भी कहा जाए या उन्हें समझा जाए उतना ही कम है। वे देशभक्त, दार्शनिक विचारक, अद्वितीय लेखक, बहुभाषाविद्, अद्वितीय वक्ता, विद्वान राजनेता, संस्कृति–चिंतक, दीन–दुखियों के सखा और हितैषी, कार्यकर्ताओं के संरक्षक और मार्गदर्शक, युवजनों के प्रेरक और प्रशिक्षक, स्त्रियों के साथ हो रहे अन्याय के तीव्र प्रतिकारकर्ता और योजनाकार, दलितों, वनवासियों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों के वाजिब हकों के लिए लड़ने वाले महान सत्याग्रही योद्धा, मानवतावादी, श्रेयस्कर और टिकाऊ विश्व सभ्यता के लिए कार्यरत विश्व नेता, इतिहासज्ञ, अर्थशास्त्री, नीतिज्ञ, औपनिवेशिक प्रशासनतंत्र को बदलने के लिए राजनीतिशास्त्री, चौखम्भा राज के चिंतक राजपुरुष, नस्लवाद और रंगभेदवाद की समाप्ति के लिए संकल्पित महान विश्व नागरिक और नेता, देशों के भीतर और देशों के बीच हर प्रकार की गैर बराबरी और नाइंसाफी को खत्म करने की दूरदृष्टि से दीर्घकालिक राजनीति कर रहे धर्मनिष्ठ महापुरूष, घटनाओं की तह तक जाकर उसके बुनियादी कारणों को उजागर करने के आग्रही पत्रकार, व्यक्तिगत जीवन में अन्यायी हस्तक्षेप के विरोधी और व्यक्ति की गरिमा के अथक संरक्षक, सादगी और स्वच्छन्दता पसन्द अभिजात्य पुरूष, अत्यधिक अध्ययनशील, ज्ञान साधक, लोगों से घुलमिल जाने में विलक्षण लोकनायक, अत्यधिक पीड़ा सह सकने में समर्थ, अपने प्रेमपूर्ण स्पर्श से नवयुवकों में उत्साह का संचार कर देने वाले युवजनों के सर्वप्रिय नेता, गंभीर सिद्धान्तों के प्रतिपादक और जनसाधारण की समझ में आ सकने योग्य मुहावरों में उन सिद्धान्तों को प्रस्तुत कर सकने में समर्थ अनूठे वक्ता, तत्कालीन कांग्रेस के लिए अजातशत्रु , भारत माता की एक श्रेष्ठ भक्त संतान, राम, कृष्ण, शिव के सच्चे आराधक, नदियों की सफाई और तीर्थों की स्वच्छता के आग्रही, पर्यावरणविद् और धर्मनिष्ठ हिन्दू, अल्पसंख्यकों के हित की वास्तविक चिंता करने वाले पंथ निरपेक्ष, भारतीय लिपि, भाषा, शिल्प, वास्तु, पुरातत्व, प्रतिमा निर्माण और प्रतिमा शिल्प के गहरे जानकार, संस्कृति पुरूष, भारतीय और यूरोपीय संगीत के मध्य विद्यमान एकता और विभेद को समझने तथा समझाने वाले सहृदय रसज्ञ और गुणीजन, पाखण्डों पर सधे हुए प्रहार करने वाले तेजस्वी धर्मवेत्ता तथा पाखण्ड ध्वंसक, राजनीति में बड़े जतन से खड़ी की गई शासकों की छवियों से युक्तिविद छविभंजक, महात्मा गांधी के प्रति निश्छल भक्ति रखने वाले सरल हृदय व्यक्ति, झूठ और हिंसा जिनके लिए स्वभावतः असम्भव थी, ऐसे श्रेष्ठ सत्पुरूष अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के मर्मज्ञ कूटनीतिज्ञ विश्व समाजवादी आन्दोलन के दिग्गज,एक विश्व सरकार और विश्वसंसद के आग्रही वैश्विक राजनेता–देखा जाए तो एक साथ सब कुछ।

इसे इतिहास की एक विचित्र घटना मानें तो ऐसी मिसाल वर्तमान भारत में मिलना नामुमकिन है कि चाणक्य से लेकर मैक्यावैली, मार्क्स और माओ तक जिस राजनीति में सब कुछ जायज है जो बुनियादी मान्यताओं पर अपनी बात आगे बढ़ाते रहे उनमें बुद्ध से लेकर महात्मा गांधी और डॉ0 लोहिया जैसे महान लोग हमारे दार्शनिक नेता मूलतः नैतिकता की स्थापना की ही लड़ाई लड़ते रहे हैं। डॉ0 लोहिया खुद को संत, पैगम्बर और दार्शनिक कहलवाना पसंद नहीं करते थे। वे खुद को राजनैतिक

कार्यकर्ता ही मानते थे। सत्ता की लड़ाई में पूरी दमखम से आजीवन वे जुड़े रहे। इस मामले में उन्होंने लाभ और पद की बात छोड़कर के बाकी सब समझौते किए। समझौते का सिलसिला गांधी, सुभाष के टकराव से लेकर के सन् 1967 ई0 के चुनाव में गैर कांग्रेसीवाद तक आता है, इन चीजों को उन्होंने कभी छुपाया नहीं, बल्कि उन्हें डॉ0 अम्बेडकर से और कई बार समाजवादी आंदोलन के दूसरे धड़ों से समझौता न होने पर अफसोस भी जताया। डॉ0 लोहिया जी ने कभी सत्ता और लाभ के लिए विचारों से कोई समझौता नहीं किया वो कुछ सिद्धान्तों के लिए जीवन भर लड़ते रहे। डॉ0 लोहिया को बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, गांधी की परम्परा से जोड़ने वाली चीज करूणा ही है जो उनके एशियाई समाजवादी दर्शन का आधार तैयार करती है। डॉ0 लोहिया की सोच और मार्क्स की परम्परा वाले समाजवाद में बहुत बड़ा अंतर है। लोहिया का मानना था कि एशिया का समाजवाद यूरोप से अलग होगा और इसी के चलते लोहिया मार्क्सवाद को ईसाइयत और उपनिवेशवाद के बाद तीसरी दुनिया के खिलाफ यूरोप का नवीनतम हथियार मानते थे। उनको लगता था कि यह भी उसी का हथियार है जिस तरह से रूस फेल हुआ है और अमेरिकी साम्राज्यवाद और अमेरिकी पूंजीवाद जिस तरह से पूरी दुनिया पर हावी हुआ है यह बताता है कि लोहिया की भविष्यवाणी शायद बहुत सही थी।

डॉ0 लोहिया गांधीवाद को अधूरा दर्शन मानते थे भले ही वह गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के अखण्ड समर्थक थे । डॉ0 लोहिया समाजवादी थे, लेकिन मार्क्स को एकांगी मानते थे, डॉ0 लोहिया राष्ट्रवादी थे, लेकिन विश्व–सरकार का सपना देखते थे, डॉ0 लोहिया आधुनिकतम विद्रोही तथा क्रान्तिकारी थे, लेकिन शान्ति व अहिंसा के अनूठे उपासक थे। डॉ0 लोहिया मानते थे कि पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों एक–दूसरे के विरोधी होकर भी दोनों एकांगी और हेय हैं। इन दोनों से समाजवाद ही छुटकारा दे सकता है। फिर भी डॉ0 लोहिया समाजवाद को भी प्रजातंत्र के बिना अधूरा मानते थे। उनकी दृष्टि में प्रजातंत्र और समाजवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। क्योंकि एक दूसरे के बिना दोनों अधूरे व बेमतलब हैं। डॉ0 लोहिया ने मार्क्सवाद और गांधीवाद को मूल रूप में समझा और दोनों को अधूरा पाया, क्योंकि इतिहास की गति ने दोनों को छोड़ दिया है। दोनों का महत्व मात्र–युगीन है। डॉ0 लोहिया की दृष्टि में मार्क्स पश्चिम के तथा गांधी पूर्व के प्रतीक हैं और डॉ0 लोहिया पश्चिम–पूर्व की खाईं पाटना चाहते थे। मानवता के दृष्टिकोण से वे पूर्व–पश्चिम, काले–गोरे, अमीर–गरीब, छोटे–बड़े राष्ट्र, नर–नारी के बीच की दूरी मिटाना चाहते थे। डॉ0 लोहिया की विचार–पद्धति रचनात्मक है। डॉ0 लोहिया पूर्णता व समग्रता के लिए प्रयास करते थे। डॉ0 लोहिया का मानना है कि ''जैसे ही मनुष्य अपने प्रति सचेत होता है, चाहे जिस सतर पर यह चेतना आए और पूर्ण से अपने अलगाव के प्रति संताप व दुख की भावना जागे, साथ ही अपने अस्तित्व के प्रति संतोष का अनुभव हो, तब यह विचार–प्रक्रिया होती है कि वह पूर्ण के साथ अपने को कैसे मिलाए, उसी समय उद्देश्य की खोज शुरू होती है।''

डॉ0 लोहिया जी ने निर्धनता, भुखमरी, अपराधीकरण, पलायन, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, सामाजिक विषमता जैसी समस्याओं के निवारण हेतु लिखा है कि "अब वशिष्ठी द्विज राजनीति, कट्टर और पागल पद प्रतिष्ठा की राजनीति से हिन्दुस्तान का पुनर्जीवन नहीं हो सकता। मेरा निश्चित मत है कि अब वही दल देश को सबल, सुखी और सच्चा बना सकेगा जिसमें औरत, शूद्र, हरिजन और मुसलमान का आधिक्य हो।"..... जहां तक बन

पड़े बीज तो औरत, हरिजन, शूद्र और मुसलमान का ही हो। इनको नेता स्थान पर बिठाया जाये। खाद द्विज की हो। ऐसा दल बनाना है। आज भारत को ऐसे ही द्विज और दल की आवश्यकता है जो व्यवहारिक हो, राष्ट्र निर्माण के लिये न कि केवल सत्ता प्राप्ति हेतु चुनाव पूर्व घोषणाओं तक सीमित हो। डॉ0 लोहिया ने उन्होंने सामाजिक विषमताओं को दूर करने हेतु पिछड़ों और औरतों को अवसर देने की बात कही थी।

कहना उचित होगा कि आधुनिक विज्ञान और जनतांत्रिक मानववाद की भावनाओं से ओतप्रोत डॉ0 लोहिया का समाजवादी दृष्टिकोण, सत्य को तिरोहित करने वाले अर्थहीन ,धार्मिक आडम्बरों और दमनकारी सामाजिक विषमताओं के प्रति विद्रोह एवं क्रांति के भाव उत्पन्न करता है। इसके साथ ही लोकतांत्रिक होकर, अपने प्रति समस्त विरोधों तथा आलोचनाओं को सहन करते हुए, पुरातनपंथी, सामंतवादी और धर्मान्धता के प्रति अपना क्रोध व घृणा व्यक्त करता है ताकि दलित एवं पिछड़े–कमजोर वर्गों को सामाजिक एवं आर्थिक मुक्ति मिले। डॉ0 लोहिया ने, ईश्वर की सृष्टि को न मानते हुए, अपने सुख–दुखों की चिन्ता न कर, मानव प्राणियों के मुख पर मुस्कान लाने तथा उनकी निरीह आंखों के अश्रुओं को पोछने का अदम्य साहस और सेवा का भाव, सीमित विनय, सद्भाव एवं सम्मान के साथ प्रदर्शित किया। ऐसे सामाजिक क्रान्तिकारी द्वारा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किये गये योगदान को विस्मरण नहीं किया जा सकता है। डॉ0 लोहिया के विचार एवं व्यवहार में एकता का अद्भुत सम्मिश्रण था। उनका चिन्तन समाजवाद से कहीं अधिक मानववाद का एक सशक्त अभिव्यक्तिकरण है।

डॉ0 लोहिया ने इतिहास की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की है। डॉ0 लोहिया ने कहा है कि इतिहास अपने निश्चित चक्र के अनुसार घूमता रहा है। इतिहास सरल रेखा की भॉति आगे नही बढ़ता बल्कि चक्रवत गति से चालित होता है चक्र में पुनरावृत्ती होती रहती है । डॉ0 लोहिया का चक्र सिद्धान्त प्रसिद्ध युनानी दार्शनिक अरस्तु के चक्र सिद्धान्त का स्मरण दिलाता है। "समयचक्र" की इस धारणा के अनुसार एक देश जो उन्नति के चरम शिखर पर है वह पतन के गर्त में गिर सकता है और एक ऐसा भी समय आ सकता है जब पतन के गर्त मे गिरा हुआ देश पुनः उन्नति करने लगे। इस प्रकार लोहिया द्वारा की गई इतिहास की यह व्याख्या कालमार्क्स की इतिहास की आर्थिक व्याख्या की धारणा है। डॉ0 लोहिया का विचार था कि "यदि यह सत्य है कि जो जन्मा है वह, मरेगा अवश्य तो यह भी सत्य है कि जो मरता है, वह फिर जन्म लेगा"। ये सिद्धान्त मनुष्य पर ही नही सभ्यताओं पर भी लागू होता है। राष्ट्रों और सभ्यताओं का उत्थान पतन एक निरन्तर घटने वाली घटना है। लोहिया मार्क्स की द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की धारणा से प्रभावित हैं लेकिन उन्होंने इसे एक संशोधन के साथ स्वीकार किया है। स्वयं मार्क्स और उनके परम्परावादी अनुयायी केवल पदार्थों की सत्ता को स्वीकार करते हैं और उसे ही एक मात्र नियामक तत्व मानते है। डॉ0 लोहिया इन परम्परागत तत्वों को मानते हैं और इन्होंने परम्परागत मार्क्सवादियों की तुलना में चेतना पर अधिक जोर दिया है। वे एक ऐसे सिद्धान्त की रचना के पक्ष में हैं जिसके अन्तर्गत आत्मा अथवा उद्देश्यों तथा द्रव अथवा आर्थिक उद्देश्यों का परस्पर ऐसा सम्बन्ध हो की दोनों का अस्तित्व कायम हो सके।

इतिहास की जो धारणा मार्क्स और हीगल ने की है, उसे डॉ0 लोहिया स्वीकार नहीं करते क्योंकि उनका मानना था कि इन दोनों ही दार्शनिकों की ऐतिहासिक व्याख्याएँ इतिहास का पूरा बोध नहीं कराती हैं। इस संबंध में वे लिखते हैं कि, ''जो लोग इतिहास के नियम की बात करते हैं तथा जो इस प्रकार का संकेत करते हैं

कि विभिन्न कालों में विभिन्न जाति के लोगों का किस प्रकार उत्थान होता है या हुआ, उन्हें यह भी बोध कराना चाहिए कि विभिन्न जातियों एवं वर्गों का उत्थान–पतन क्यों हुआ और यदि वे इस प्रश्न का उत्तर देने में समर्थ न हों तो फिर उनके 'इतिहास नियम' के संबंध में कहना प्रलाप ही है। लक्षणों के विषय में संकेत करना कारणों को बताना नहीं है।'' मानव इतिहास के विषय में डा0 राम मनोहर लोहिया लिखते हैं कि, ''यह स्मरण रखना अनिवार्य है कि ऐतिहासिक अन्वेषण का मुख्यतः तथ्यों ;थ्ंबजेद्ध के प्रकाशन से है और अभी बहुत से तथ्य अज्ञात बने हुए हैं। कुछ स्थितियों में तो प्रमाण तथा तथ्यों के बीच संघर्ष अभी तक नहीं सुलझ सका है। जब यह स्थिति गोचर पदार्थों एवं घटनाओं के संबंध में है तो फिर सूक्ष्म प्रवृत्तियों एवं भावनाओं के बारे में तो निरन्तर मानव के अर्द्धचेतन मन को एवं उनके माध्यम से इतिहास को उद्वेलित करती रहती है, कहना ही क्या है।'' डॉ0 लोहिया अरस्तु के कालचक्र से तो सहमति रखते थे पर वे 'सीधे रेखाकार ऐतिहासिक विकास' के सिद्धान्त से पूर्णतया असहमत थे। डॉ0 लोहिया स्पेन्गलर, नार्थट्राप आदि इतिहासकारों के समान यह विश्वास रखते थे कि राष्ट्रों तथा सभ्यता का उत्थान–पतन सदैव होता रहता है तथा इतिहास के विद्यार्थी के नाते हमें ब्रिटिश साम्राज्य के उत्थान, साम्राज्य के पतन, गुप्त राज्य के उत्थान तथा रोम साम्राज्य आदि के पतन के बारे में ज्ञात है। कोई भी देश इतिहास की चक्राकार गति से घूमता हुआ कभी अपने वैभव एवं विकास की चरम सीमा बिन्दु पर तो कभी पतन के अधोबिन्दु पर पहुँच जाता है। इस संबंध में डॉ0 लोहिया तीन तथ्यों का प्रतिपादन करते हैं –

1. देशों का उत्थान–पतन होता है। वैभव–धन का स्थान बदलता रहता है। समूह के बाहरी रिश्तों में उतार–चढ़ाव होता रहता है।
2. समूह के अंदर वर्ग–जाति का संघर्ष होता रहता है।
3. सभी समूह शारीरिक साँस्कृतिक ढंग से मिलन भी करते हैं। कारणों की खोज का कोई अंत नहीं। इतिहास का प्रवाह और घटनाएँ होती रहती हैं। डा0 राम मनोहर लोहिया इस सन्दर्भ में अपनी बात स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि, ''यह वर्गों एवं जातियों तथा विचार प्रेरक प्रवृत्तियों एवं सभ्यताओं के मध्य संघर्ष इतिहास में तब तक चलता रहेगा, जब तक कि मनुष्य में बुराई समाप्त नहीं हो जाती।'' उनका विश्वास था कि ''संसार अन्ततः विवेकपूर्ण तरीकों से मानव जाति की बहुरंगी एकता स्थापित करने में सफल हो सकेगा।''

डॉ0 लोहिया ने हिन्दू मुसलमानों के मध्य संघर्ष का एक महत्वपूर्ण कारण इतिहास की गलत व्याख्या को माना जाता है। डॉ0 लोहिया इसी ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि इतिहास क्या है? इतिहास है अतीत का बोध और भविष्य और वर्तमान का निर्माता। अगर वह गलत है तो गलत ढंग से वर्तमान और भविष्य बनता है। डॉ0 लोहिया के विचारानुसार इतिहासकारों ने इतिहास को इतने आधुनिक ढंग से विश्लेषित किया है कि वह हिन्दू–मुसलमान में घृणा और द्वेष का भाव भरता है। साम्प्रदायिकता को जन्म देने में अंग्रेजों की 'फूट डालो ओर राज करो' की नीति भी एक प्रमुख कारण रही, जिसका परिणाम देश–विभाजन के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है।

डॉ0 लोहिया ने इस समस्या के निराकरण हेतु पाँच प्रकार के प्रयासों का सुझाव दिया है –हृदय परिवर्तन, इतिहास की सही व्याख्या, राजनीति में सुधार, भाषा सम्बंधी उदार नीति, धार्मिक प्रयत्न। साम्प्रदायिकता की समस्या के समाधान हेतु हृदय–परिवर्तन एक महत्वपूर्ण कदम है। डॉ0 लोहिया ने इस विषय में कहा था कि ''हिन्दुस्तान के मुसलमानों को सच्चे दिल से

देशभक्त बनना चाहिए और उन्हें देशभक्त बनने के लिए मन बदलना होगा। दोनों का–हिन्दू का भी और मुसलमान का भी .....।'' डॉ0 लोहिया के अनुसार मुसलमानों के हृदय–परिवर्तन और उनसे साम्प्रदायिकता की भावना को समाप्त करने के लिए इतिहास लिखित तरीके से व्याख्या अनिवार्य है। डॉ0 लोहिया ने इतिहास का सूक्ष्म अध्ययन और विवेचन करके यह स्पष्ट किया कि इतिहास हिन्दू–मुसलमान की एकता से परिपूर्ण है। उसमें कहीं कोई साम्प्रदायिकता नहीं है। डॉ0 लोहिया साम्प्रदायिकता का अंत करने के लिए आधुनिक राजनीति में परिवर्तन चाहते थे। डॉ0 लोहिया ने जीवन के प्रत्येक पहलू में 'हिन्दू बनाम मुसलमान' के स्थान पर हिन्दू और मुसलमान का सिद्धांत स्थापित किया।

डॉ0 राममनोहर लोहिया एक अध्येता की भाँति आजीवन भारतीय इतिहास, भारतीय सभ्यता और संस्कृति, भारत के महापुरुष एवं व्यक्तित्व की खोजबीन करते रहे। उनकी दृष्टि का फलक व्यापक और अनुसंधान का स्रोत संपूर्ण विश्व का समाज–दर्शन था। देश, काल एवं परिवेश से डॉ0 लोहिया का जुड़ाव गहरा था। डॉ0 लोहिया के लिए शायद ही देश का कोई ऐसा कोना बचा हो जहाँ उन्होंने अपने पाँव न धरे हों। देश की भूमि, नदियाँ, भाषा, पोशाक, भोजन, समाज, अर्थव्यवस्था, इतिहास, पुराकथाएँ, दर्शन, किंवदन्तियाँ, कलाएँ इन सबसे लोहिया ने संपर्क–साहचर्य साधने की भरपूर कोशिश की। भारत के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से जैसा साक्षात्कार लोहिया ने किया, वैसा निश्चय ही स्वातन्त्र्योत्तर युग के किसी अन्य राजनेता ने नहीं किया। लोहिया सदैव इस दिशा में प्रयासरत रहे कि भारत में आधुनिक जन–राजनीति के साथ–साथ एक सांस्कृतिक क्रांति का 'मॉडल' कैसे बनाया जाए जिसमें पारंपरिक संस्कृति के मानवतावादी और बौद्धिक तत्त्व संग–साथ समाहित हों? देश की जड़ता से उनका आशय धार्मिकता के आवरण में पैठी साम्प्रदायिकता और जाति–व्यवस्था से थी जो एक खास तरीके से धर्म–प्रभुत्व का द्योतक थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाँधी मार्ग,इलाहाबाद–211001,पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–डा0 लोहिया : इतिहास–चक्र ;*ॅीममस वि भ्पेजवतलद्ध*,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,संस्करण :1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- भाटिया पी.आर.–भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ.प्र)
- कुमारआनन्द,कुमार,मनोज–तिब्बत,हिमालय ,भारत,चीनऔरडॉ0राममनोहरलोहिया–अनामिकाप्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- इंटरनेट से डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू.गूगल एवं विकीपीडिया का जिन्होंने डॉ0 राम मनोहर लोहिया पर अद्यतन सामग्री उपलब्धि कराई।
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011

- शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- वर्मा श्रीकांत रचनावली,खंड–3
- कथाक्रम, अप्रैल–जून 2011
- कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009
- सिंघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009